25

पाप की समस्या

रोमियों 3:23; 6:23

''इसलिए कि सब ने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं'' (रोमियों 3:23)।

यदि किसी को यह पता न हो कि वह खोया हुआ है तो वह बचाए जाने की इच्छा कैसे रख सकता है? कोई यह कैसे कह सकता है कि पाप है ही नहीं?

एक मुख्य विषय

पाप बाइबल के प्रमुख विषयों में से एक है। परमेश्वर ने लोगों को पाप से परिचित कराने के लिए मूसा की व्यवस्था दी: ''क्योंकि व्यवस्था के कामों से कोई प्राणी उसके सामने धर्मी नहीं ठहरेगा, इसलिए कि व्यवस्था के द्वारा पाप की पहचान होती है'' (रोमियों 3:20)। वह यहूदी, जिसने पूछा था कि ''परमेश्वर को छोड़ और कौन पाप क्षमा कर सकता है?'' (मरकुस 2:7; लूका 5:21), बिल्कुल सही था। जब हमें समझ आ जाता है कि पाप क्या है तब हम हैरान होते हैं–इस पर नहीं कि परमेश्वर को पाप क्षमा करना कठिन क्यों लगता है, बल्कि इसलिए कि उसे पाप क्षमा करना आवश्यक क्यों लगता है! क्या पाप में रहते हुए मनुष्य उद्धार पा सकता है? क्या परमेश्वर जो ''पवित्र'' तथा पाप से बहुत दूर है, पाप क्षमा कर सकता है? (यशायाह 6:3; देखें प्रकाशितवाक्य 4:8)। वह हमारी समझ से परे पवित्रता है। केवल क्रूस के द्वारा ही वह धर्मी परमेश्वर हमें क्षमा कर सकता है।

वैश्विक परिणाम

आदम और हव्वा ने ''जरा सा फल चख'' लिया, बस यही काफी था। मनुष्यजाति को किसी हत्या, चोरी, गाली या दुर्व्यवहार के साथ पाप करने के लिए विवश करने की आवश्यकता नहीं थी। आदम तथा हव्वा के पाप करने के साथ ही स्वर्ग में, नरक में और धरती पर सब कुछ बदल गया। परमेश्वर मनुष्य तथा शैतान के साथ सब कुछ बदल गया। मनुष्य में सब बदल गया। मनुष्य जाति वैसी ही रहनी थी। आश्चर्य की बात नहीं कि परमेश्वर ने आदम से कहा, ''तुम कहां हो?'' (उत्पत्ति 3:9)। उत्पत्ति अध्याय 2 और 3 पढ़ें, आप कांप जाएंगे! मनुष्य अब गिरा हुआ, दण्ड पाया हुआ पापी बन गया।

''ज़रा सा चखने का'' यह इतिहास कहीं बढ़कर है। आदम और हव्वा ने अपने जीवनों में शैतान को आने दिया। उन्होंने शैतान की सुनी, उस पर विश्वास किया और उसकी बात मान ली। उसने परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन किया। परमेश्वर तो परमेश्वर है और सृष्टिकर्त्ता होने के कारण मनुष्य पर उसका भी अधिकार है। आदम और हव्वा ने परमेश्वर के अधिकार के विरुद्ध बगावत कर दी।

व्यक्ति तभी परीक्षा में पड़ता है जब वह अपनी कामनाओं से भरमाया जाता है (याकूब 1:14)।

बाहर पाप करने से पहले वह अन्दर से पाप करता है। यह परमेश्वर के परमेश्वर होने से इनकार करना है; यह मनुष्य की मनुष्य से बढ़कर होने की कोशिश करना है। पाप के बारे में हमारी यह सोच है कि हम अधिक जानते हैं और हमें परमेश्वर से अधिक ज्ञान है।

परमेश्वर के साथ अब मनुष्य का सम्बन्ध टूटा हुआ है, जिस कारण वह गुमराह होकर विनाश के मार्ग पर जा रहा है। पाप परमेश्वर की नज़र में बहुत गम्भीर है। सच्चाई में जब मनुष्य पाप करता है तो वह स्वयं अपना परमेश्वर बनने का निर्णय ले रहा होता है।

परमेश्वर से दूर पापी अपने पापों में मरे हुए हैं (इफिसियों 2)। पाप की मज़दूरी मौत है (रोमियों 6:23)। हमारे पाप अगर क्षमा न किए जाएं तो हमें हमेशा के लिए परमेश्वर से दूर कर सकते हैं (यशायाह 59:2, 3)। संसार की हर लड़ाई, हिंसा और उथल-पुथल की शुरुआत उस ''थोड़ा सूखने'' के साथ ही हुई। परमेश्वर ने यह होने से पहले ही आदम को बता दिया था। पर परमेश्वर को निकाल दिया गया। तब से ही शैतान इस संसार का ईश्वर, सरदार तथा पिता है (यूहन्ना 8:44; 12:31; 14:30; 16:11; 2 कुरिन्थियों 4:4).

उद्धार पाने के लिए पापियों को पाप को वैसे ही देखना आवश्यक है, जैसे इसे परमेश्वर देखता है। मनफिराव तब तक नहीं हो सकता, जब तक पापियों को पाप की भयानकता का अहसास नहीं होता। जो लोग परमेश्वर का भय नहीं रखते वे पाप करने से नहीं डरते। परमेश्वर को पवित्र मानने वाले लोग पाप को शत्रु मानते हैं।

परमेश्वर पाप से घृणा करता है, और हमें भी इससे घृणा करनी चाहिए; परन्तु अफसोस कि बहुत से लोग पाप से घृणा नहीं करते। जितने पवित्र हम होंगे, उतनी ही पाप से घृणा करेंगे, क्योंकि हमें समझ आ जाएगा कि यह हमारे और परमेश्वर के सम्बन्ध तुड़वा देता है।

आशाहीन और बेसहारा

पाप में फंसा मनुष्य अपने आप को बचा नहीं सकता। वह उद्धार कमा या पा नहीं सकता, और न ही उसका अधिकारी हो सकता है। वह उद्धार पाने के लिए न तो अधिक जान सकता है, और न अधिक कर सकता है। यह काम उसकी जगह कोई ओर नहीं कर सकता।

यीशु हमें परेशानियों या आदतों से छुटकारा दिलाने के लिए नहीं आया। वह हमारे पापों के लिए मरा (रोमियों 5:6, 8; 1 पतरस 1:18, 19)। उसके पास आने पर हमें उसके लहू में धोया जाता है (1 कुरिन्थियों 6:11; इब्रानियों 10:19; प्रकाशितवाक्य 1:5; 7:14)। यीशु को पाप बनाया गया न कि *पापी* (2 कुरिन्थियों 5:14-21)।

चुन्ना हमें है। हम क्रूस पर यीशु द्वारा अपने पापों को दण्ड दे सकते हैं या हमेशा के लिए नरक में अपने ऊपर दण्ड ले सकते हैं।

अपने पापों से निपटने का हमारे पास एक ही ढंग है कि हम यीशु को अपने पापों को क्षमा करने दें। उसे यह करने देने के लिए हमें अपने पापों से मन फिराना अर्थात उन से मरना और बपतिस्मे में धोना आवश्यक है। (देखें प्रेरितों 2:38; 22:16; रोमियों 6:1-7; 1 पतरस 2:24.)

क्रूस ...
और मार्ग ही नहीं है!